Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 07 Issue 07, July- 2012
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आजादी के बाद के हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश

आराधना सारवान
राज. शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान

आजादी के बाद लगभग हर दशक में ग्रामीण जीवन केन्द्रित अनेक महत्वपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुए। इन उपन्यासों में बदलते ग्रामीण जीवन की विद्रूपताओं, विसंगतियों, विकृतियों और समस्याओं को उजागर किया गया। गांवों की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, टूटती परम्पराएं–रूढ़ियाँ, उजडते घर–परिवार, सांस्कृतिक स्थितियाँ, लुप्त होती सरलता, नैतिकता आदि को कोई भी पक्ष या स्थिति उपन्यासकारों की दृष्टि से अछूता नहीं रहा। गांवों के मोहक और भयावह दोनों रूपों को चित्रण स्वतंत्रता के बाद के हिन्दी उपन्यासों में दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद लेखकों की नई पीढ़ी सामने आती है जिनका ग्राम्य–जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है। इनके पास ग्राम्य–यथार्थ के ठोस अनुभव हैं। परिणामस्वरूप प्रगतिवादी और आंचलिक साहित्य के अन्तगर्त प्रचुर मात्रा में ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास लिखे गए। इन उपन्यासों में जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, शिक्षा का विकास, पंचायती व्यवस्था, चुनावी रणनीति के तहत जातीय भेदभाव, पारम्परिक कृषि व्यवस्था, आधुनिक कृषि के संसाधनों का विकास, नए रोजगार के अवसरों के कारण एवं बदहाल ग्रामीण जीवन के कारण गांव के लोगों को शहरों की तरफ पलायन, विभिन्न विकास कार्यो के लिए भूमि अधिग्रहण, टीवी, कम्प्यूटर, मोबाईल का गांव में पदार्पण आदि मुद्दे उद्घाटित हुए हैं।

गांव के लोगों की जीविका का प्रमुख जरिया खेती, जंगल, पहाड़, पशु, नदी आदि संसाधनों से जुडा होता है। आर्थिक दृष्टि से ग्रामीण लोग गरीब और सुख सुविधाओं से वंचित होता हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, रोजगार आदि साधन निम्न स्तर पर होते हैं। ये सभी समस्याएं उपन्यासकारों को प्रेरित करती हैं ग्रामीण जीवन पर कलम चलाने के लिए। हालांकि आजादी के बाद गांव की जीवन शैली में परिवर्तन आया है। मगर आज भी अनेक समस्याओं से गांव घिरे हुए हैं। गांव की इन्हीं समस्याओं को उपन्यासकार चित्रित करते हैं।

आजादी के बाद गांव के रूप–रंग, प्रकृति–परिवेश, में भी बदलाव आया है। यह बदलाव सकारात्मक और नकारात्मक दोंनो पक्ष रखता है। लोकतांत्रिक प्रणाली तथा विकास परियोजनाओं की वजह से स्वास्थ्य, बिजली, शिक्षा, पानी, आजीविका जैसी स्थाई समस्याओं में गांवो में कुछ सुधार आया है। शिक्षा के स्तर से लोगों में जागरूकता आई है। जिससे अन्याय एवं शोषण पर अंकुश लगा है। लेकिन इतना सब होने के बाद भी असमानता, अन्याय, षोषण, भेदभाव, जातिगत वैमनष्य, अत्याचार आदि आज भी गांवों में मौजूद हैं। इन सभी पहलुओं को उपन्यासकारों ने अपने

उपन्यासों में चित्रित किया है। स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण जीवन पर आधारित अनेक उपन्यास लिखे गए। परन्तु यहां प्रमुख उपन्यासों का ही वर्णन किया जा रहा है।

नागार्जुन द्वारा लिखित 'बलचनमा' उपन्यास एक निम्नवर्गीय ग्रामीण किसान की पीड़ा को कहता है। बलचनमा के पिता के मृत्यु के बाद उसे बचपन में ही जमींदारों के यहां हरवाही करनी पड़ती है। वह बहुत मेहनत करता है लेकिन उसके बावजूद भी उसे जमींदार की डाँट–फटकार, जूठन ही मिलती है। पूरे उपन्यास में निम्नवर्गीय किसान की यातनापूर्ण जीवनस्थितियों का चित्रण किया गया है। बलचनमा जमींदारों के क्रूर मंसूबों और उनके दोहरे चरित्र को बखूबी समझता है लेकिन वह विवष होता है। बलचनमा कहता है–''माँ उनके यहां घरेलू काम पहले की ही भांति अब भी किये जा रही थी। बरतन मांजना, पानी भरना, झाड़ू बुहारी देना, लीपना–पोतना, चूल्हा जलाकर रसोई चढ़ा देना। यही कुल काम थे। काम जास्ती नहीं था, मगर–लपटौनी बहुत बड़ी थी। लपटौनी का मतलब समझे भैया? वही समझा होगा, तुमने अरे भाई एक होता है काम लेना– चट से कहा पट से काम हो गया। दूसरी होती है घिचिर–पिचिर, घिचिर–पिचिर का मतलब होता है खुद भी उलझन में पड़े रहना और दूसरों को भी उलझाये रखना। न अपने बखत की कदर न दूसरे की। देहात में जो बड़े लोग कहलाते हैं, उनके यहाँ न काम की कीमत न कमकर मजदूरों की। हमारे बाप–दादे दो–दो पहर बैठे कर मालिकों की उँगलियाँ चटकाया करते थे। मालिकान के जरा सी उमर के बच्चे के पैर धोने में उन्हें घण्टों लग जाता था। बूढ़े मालिक के घर तमाकू चुनाते तो आधा पहर उसी में बीत जाता।''[प] इतना बेबस और अभावग्रस्त था निम्नवर्गीय ग्रामीण लोगों का जीवन। कारिंदों–जमीदारों के यहां पुस्तों तक बेगारी और नौकरी करनी पडती थी। पूरी जिंदगी शारीरिक रूप से उनके यहां काम करने के बाद भी इन ठाकुरों और जमीदारों को ग्रामीण लोगों की हैसियत जानवर से भी कमतर लगती थी। नागार्जुन के अन्य उपन्यासों में बाबा बटेसरनाथ, इमरतिया, वरूण के बेटे और दुःखमोचन में भी ग्रामीण जीवन को चित्रित किया गया है। अकाल, बाढ़, कम्पनी का शासन, कारिंदों का षोषण, बेगारी, चम्पारण सत्याग्रह, जमींदारों का जोर–जुल्म, किसानों की यातना, आदि ग्रामीण किसानों की समस्याओं को इन उपन्यासों में रेखांकित किया गया है।

फणीष्वरनाथ रेणू कृत 'मैला आचंल' बिहार के पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव पर अधारित एक आंचलिक उपन्यास है। एक अंचल विशेष के जीवन की विविध स्थितियों का जीवंत चित्रण इस उपन्यास में देखकर यही प्रतीत होता है कि यह उपन्यास भारतीय गाँवों की एक विश्वसनीय गाथा है। ग्रामीण जीवन की कथा के अलावा इसमें कुछ है ही नहीं। इस उपन्यास का 'मेरीगंज' पिछडे गाँवों का प्रतीक है। 'मेरीगंज' की विषेषता और विद्रूपता दोनों को फणीष्वर नाथ रेणू ने बड़ी कुशलता के साथ अंकित किया है। उपन्यास की भूमिका में रेणू ने लिखा भी है–''इसमें फूल भी है, ष्षूल भी है, गुलाब भी है, कीचड भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरुपता भी–मैं किसी से दामन बचा कर निकल नहीं पाया।''[पप] मैला आंचल उपन्यास के 'मेरीगंज' में यदि एक तरफ जातीय वैमनस्यता, अनैतिकता, यौन विकृतियाँ, शोषण, गरीबी, असमानता, वर्गीय संघर्ष, बेकारी, अज्ञानता है तो दूसरी तरफ सांस्कृतिक–उत्सव, नाच–गाना,

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 07 Issue 07, July- 2012
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उल्लास, एक नयी सुबह की उम्मीद भी है। मेरीगंज के पारंपरिक समाज में आधुनिकता का प्रवेश पुरानी रीति–नीति और परंपराओं को तोडता हुआ नजर आता है। उपन्यास के अन्त में हम डॉ. प्रशांत को ग्राम विकास के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होता है। वह कहता है–''ममता मैं फिर काम शुरू करूंगा'– यहीं, इसी गांव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आंसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाऐगें। मैं साधना करुँगा ग्रामवासिनी भारत माता के मैले आंचल तले कम से कम एक ही गांव के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कुराहट लौटा सकूँ। उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूं।''[पपप] डॉ. प्रषांत एक तरह से रेणु का प्रतिनिधत्व करते हैं। यहां लेखक गांव में जिस प्रेम की खेती और धरती पर प्यार के पौधों की बात कर रहा है उससे साफ पता लगता है कि गांव में अब आपसी मेल मिलाप तथा भाई चारे वाला माहौल नहीं रहा। बदलते परिवेश ने गांवों को अपनी चपेट में ले लिया है। मैला आंचल इसी कारण हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। इस उपन्यास की लोकप्रियता ने आंचलिकता और ग्रामीण जीवन को हिन्दी साहित्य में एक चलन बना दिया। ग्रामीण जीवन पर आधारित 'मैला आंचल' की उपलब्धि और सीमाओं को बयां करते हुए मधुरेश लिखते हैं–''रेणु मेरीगंज के माध्यम से संपूर्ण भारतीय ग्राम–समाज की कहानी कहते हैं। देश की स्वाधीनता के बाद नवनिर्माण आरै योजनाओं के दौर में मेरीगंज भी इस सबसे अछूता नहीं रहता। मलेरिया उन्मूलन का कार्यक्रम जैसे गांव के पुराने रूप और बंद समाज के लिए एक बहुत तेज धक्का है। गांव में धीरे–धीरे प्रवेश करती परिवर्तन की हवा को लेखक ने अनेक संकेतों से स्पष्ट करने की कोशिश की है। बावनदास की उपेक्षा और परिणति मूल्यों पर केन्द्रित निष्ठापूर्ण राजनीति की व्यर्थता का ही संकेत है। 'मैला आंचल' में अंचल की सांस्कृतिक और लोकतात्विक विशेषताओं पर लेखक ने खूब ध्यान दिया है। यह ठीक है कि यहां अंचल का सामूहिक जीवन ही सब कुछ नहीं है, जैसे वह गोपीनाथ महांती के 'अमृत संतान' में है, लेकिन उपन्यास के पात्र अपने इस अंचल से बहुत आत्मीय भाव से जुड़े हैं और वह अंचल उन्हें किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित करता है। लेकिन एक गांव के रूप में मेरीगंज को समूचे राष्ट्र के प्रतीकत्व स्वीकृति का आग्रह उपन्यास के आंचलिक चरित्र को प्रभावित करता है।''[पअ] मैला आंचल ग्रामीण जीवन का एक ऐसा दस्तावेज है जो संपूर्ण गांवों की कथा कह देता है। गांव की अच्छाई और बुराई दोनों स्थितियों को रेणु ने इस उपन्यास में बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया है।

रेणु का दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' भी ग्रामीण जीवन की कथा को बयां करता है। जाति के आधार पर कई टोलों में विभाजित परानपुर गांव की कहानी कहता है परती परिकथा उपन्यास। इस गांव में अन्य गांवों की तरह अंधविश्वास, अज्ञानता, आपसी कलह, टुच्ची राजनीति, गोलबंदी सब कुछ है। 'परती परिकथा' उपन्यास में एक नयी कृषि–क्रांति को लाखों एकड़ बंजर जमीन पर संभव होते दिखाया गया है। परती सिर्फ जमीन ही नहीं, 'परानपुर' का परिवेश भी बंजर और शुष्क हो गया है। उपन्यास का पात्र जितेन्द्र गांव में व्याप्त तनाव–कटुता, अलगाव को समाप्त कर लोगों को एकसूत्र में बांधने की कोषिष करता है। ग्रामीण परिवेश की कथा कहने वाले परती परिकथा उपन्यास के बारे में विवेक राय लिखते हैं–''स्वाधीन भारत की आकांक्षाओं के जीवंत दस्तावेज के रुप में प्रस्तुत इस

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 07 Issue 07, July- 2012
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कृति में अंचल के समृद्ध गाँव परानपुर को पृष्ठभूमि बनाया गया है। यहाँ विकास के लिए उपेक्षित ऊसर विरान और बन्ध्या धरती की धूल में उन्नत वैज्ञानिक कृषि की संभावनायें छिपी पड़ी है। इन संभावनाओं को धरती पर जिन हाथों से कथाकार उतारता है वे हाथ एक जमींदार के हैं। वह साहस के साथ जड़ परम्पराओं से लड़ता है। भूस्वामी का भू–सेवक के रुप में रुपान्तर दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार 'परती परिकथा' का मुख्य केन्द्र कृषि–क्रांति है। गाँव की अंधविश्वासों की परती टूटती है। अगणित अंधविश्वासों, अंध–परम्पराओं और जड़ सांस्कृतिक व्यामोह ग्रस्तताओं की इस बाहरी परती के साथ ग्राम मन की परती भी टूटती है। धर्म मूलक सांस्कृतिक कृषि का अन्त और वैज्ञानिक कृषि का अवतरण परम्परावादी गांव में आधुनिकता का प्रवेश है। इस प्रवेश में अभूतपूर्व हलचल और टकराहटें हैं। बहुत गहमा गहमी से रेणु ने सबको चित्रांकित किया है।''[अ] परंपरागत मान्यताओं को दूर कर खेती और मानसिक स्थिति दोनों को आधुनिक करने की जरूरत है। रेणु ने गांव की समस्याओं को सिर्फ मूल आवष्यकताओं–बिजली, षिक्षा, सडक, पानी, चिकित्सा आदि तक ही सीमित नहीं रखा है। अपितु आधुनिक और तकनीक को भी वे गांव में लाना चाहते हैं और गांव में सुधार होगा इसी आषा के साथ रेणु उपन्यास का अंत बडा ही सुखद करते हैं–''नव निर्माण के उल्लास–उत्सव से, पूर्व की तिक्तता–कटुता पारस्परिक सहयोग–सहकार के समारोह में परिणत हो चली है–खेल समाप्त हो गया। जनता बैठी है।.... और भी होगा? परदा उठाइए। कलख कोलाहल।.... दुलारीदाय? कोशिका महारानी।.... खोली–आ–ओ।.... परदा उठा। लोक मंच के कलाकार, मंच पर खड़े होकर जनता को नमस्कार करते हैं।..... डॉक्टर राय चौधरी की मुद्रा–तुमी पारबे। हर्षोन्मत्त जन–मन.....! सेमलबनी के आकाश में अबीर–गुलाल उड़ रहा है। आसन्न प्रसवा परती हँसकर करवट लेती है।''[अप]

केसव प्रसाद मिश्र द्वारा लिखा गया उपन्यास 'कोहबर की शर्त' पूर्वी उत्तर प्रदेश के दो गांव 'बलिहार' और 'चौबे छपरा' के जन–जीवन को गहरी संवेदना और आत्मीयता के साथ चित्रित करता है। वस्तुतः यह उपन्यास चंदन और गुंजा की ग्रामीण परिवेश की प्रेम कहानी है। परन्तु इस प्रेम कहानी के माध्यम से उपन्यासकार ग्रामीण जीवन की जड़ता, अमानवीय रुढ़ियां, दीनता, विवशता, रिष्तों की अहमीयत आदि को भी उद्घाटित करते हैं।

शिवप्रसाद सिंह का 'अलग–अलग वैतरणी' पूर्वी उत्तर प्रदेश के 'करैता' गाँव के कथानक को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है। यह उपन्यास आजादी के बाद ग्रामीण जीवन में आ रहे व्यापक परिवर्तन को रेखांकित करता है। अजादी के बाद गांवों में संवेदनशीलता, पारम्परिक, नैतिकता, परिवार, रिष्ते नाते, पारस्परिक भाई–चारा आदि में बहुत परिवर्तन आया है। परिणाम स्वरूप गाँव बद से बदतर होते जा रहे हैं। गरीबी, अंधविश्वास, गोलबंदी, दुराचार, जड़ता, अज्ञानता, लूट–खसोट के कारण गांव से लोग पलायन कर रहे हैं। लेकिन कुछ लोग विवष हैं, वे कहा जाएं? रामदरश मिश्र इस उपन्यास के लिए लिखते हैं–''यह उपन्यास स्वाधीनता प्राप्ति के बाद टूटते हुए गाँव की कहानी है। इस टूटते गावँ में अभी भी कुछ टूटने को बाकी है। वास्तव में यह टूटना जड़ता और अज्ञानता का टूटना नहीं है बल्कि मूल्यों और सम्बन्धों का टूटना है, विवेक और संवेदनाओं का टूटना है, साथ ही साथ जमींदारी

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 07 Issue 07, July- 2012
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

और जाति–पांति का भी टूटना है। किन्तु यह कितनी बड़ी विड़म्बना है कि बुरी चीजें टूटकर भी नहीं टूटी और अच्छी चीजें टूटने लगी तो फिर टूटती ही गयी हैं।''[अपप]

राही मासूम रजा द्वारा लिखित उपन्यास 'आधा गाँव' गाजीपुर जिले के मुस्लिम बाहुल्य गांव 'गगोली' की कथा है। 'आधा गांव' उपन्यास में सैय्यद, षिया और सुन्नी मुसलमानों के जीवन की विविध स्थितियों तथा हिन्दुओं के बदलते सम्बन्धों को प्रकट किया गया है। उपन्यास में मुसलमानों के धार्मिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, सामाजिक और यौन जीवन खासकर रेखांकित किया गया है। जमींदारी उन्मूलन के बाद जमींदारों की जिंदगी के अन्तर्विरोधों को लेखक ने बडी कुशलता के साथ चित्रित किया है। उपन्यासकार ने इस उपन्यास के बहाने ग्रामीण जीवन की अनेक समस्याओं को अंकित किया है। राही मासूम रजा ने उपन्यास की भूमिका में लिखा है–''यह कहानी न कुछ लोगों की है और न कुछ परिवारों की। यह उस गाँव की कहानी भी नहीं है जिससे इस कहानी के भले–बूरे पात्र अपने को पूर्ण बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह कहानी न धार्मिक है, न राजनीतिक। क्योंकि समय न धार्मिक होता है, न राजनीतिक और यह कहानी है, समय ही की। यह गंगोली में गुजरने वाले समय की कहानी है।''[अपपप] आधा गांव उपन्यास में घटनाओं, दृश्यों, पात्रों, की संख्या बहुत ज्यादा है। इस उपन्यास में गालियों का खूब प्रयोग किया गया है। यहां तक कि यौन दृश्यों का भी वर्णन लेखक ने अनेक जगह किया है। इन सब कारणों की वजह से इस उपन्यास पर अश्लीलता का आरोप भी लगा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आजादी के बाद ग्रामीण जीवन को केन्द्र बनाकर लिखे जाने वाले उपन्यासों की एक लंबी परम्परा रही है। उपन्यासकारों ने ग्रामीण जीवन के हर पहलु को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ वर्णित किया है। लोकतंत्र, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण के फलस्वरूप हो रहे परिवर्तनों ने ग्रामीण जीवन के संपूर्ण स्वरूप और संरचना को बदल दिया। इन उपन्यासों में इस बदलाव के समस्त आयामों को चित्रित किया है। गांव को इन कथाकारों ने रोमांटिक दृष्टिकोण से नहीं अपितु आलोचनात्मक दृष्टि से देखा है। इन उपन्यासों में ग्राम्य जीवन की यथार्थ और ठोस अभिव्यक्ति हुई है। स्वातंत्रयोत्तर भारत के गाँवों के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक जीवन का पूरा लेखा–जोखा इन उपन्यासों में उपस्थित हो गया है। एक तरह से ग्रामीण जीवन की यात्रा करवाते हैं ये उपन्यास। ये उपन्यास यथार्थ की कलात्मक प्रस्तुति ही नहीं वरन भारतीय गांवों को समझने का एक जरूरी दस्तावेज सिद्ध हो रहे हैं।

संदर्भ सूचि–

[i] नागार्जुन, बलचनमा, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण–1956 पृ.–16
[ii] फणीष्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, रामकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, संस्करण–2007, पृ.–5
[iii] फणीष्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, रामकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, संस्करण–2007, पृ.–312
[iv] मधुरेष, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाषन, इलाहाबाद, संस्करण–2004, पृ.–140
[v] विवेक राय, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास–सं. रामदरश मिश्र, ज्ञानचंद गुप्त, चेतना प्रकाषन, कानपुर, संस्करण–2000, पृ.–20
[vi] फणीष्वरनाथ रेणु, परती परिकथा, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ.–379
[vii] रामदरष मिश्र, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, संस्करण–2010 पृ.–244
[viii] राही मासूम रजा, आधा गाँव, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, संस्करण–1989, भूमिका, पृ.–4